कैंसर पर मार

भले ही इंसानों में बेहद पतला-दुबला होना अच्छे स्वास्थ्य का सूचक न हो लेकिन एक नई दवा है जिसके पतलेपन ने उसके असर में ईज़ाफा कर दिया है। यह नई दवा बीएल-22 एक प्रकार के रक्त कैंसर में काफी कारगर पाई गई है। वॉशिंगटन के करीब स्थित नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट के रॉबर्ट क्रेटमैन की टीम की ईजाद यह दवा बीएल-22 दरअसल आधी तो एक एण्टीबॉडी है और आधी बैक्टीरियाई विष। (एण्टीबॉडी दरअसल शरीर में आए बाहरी तत्वों (एण्टीजन) की प्रतिक्रिया स्वरूप कोशिकाओं द्वारा तैयार एक प्रोटीन होता है. विशिष्ट एण्टीजन के प्रभाव स्वरूप विशिष्ट एण्टीबॉडी का निर्माण होता है। एण्टीबॉडी इन एण्टीजन से रासायनिक रूप से जुड़कर उन्हें नेस्तानबूद कर शरीर को उनके हानिकारक प्रभावों से बचाती हैं और शरीर को उनके घातक हमले के विरुद्ध प्रतिरोधी बनाती हैं।)

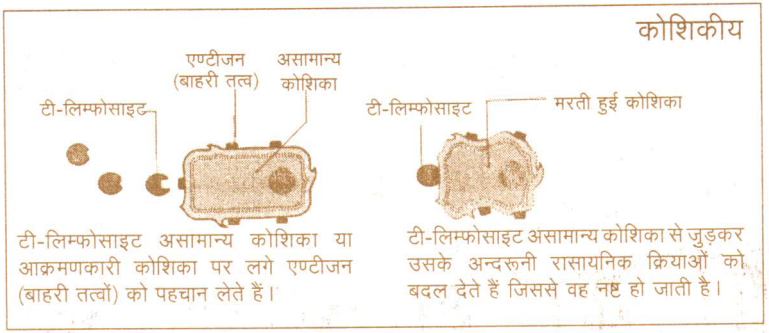

वैसे एण्टीबॉडी और बैक्टीरियाई विष का यह मेल कोई नई बात नहीं। ऐसी प्रतिरोध औषधि कैंसर के इलाज में पिछले 10 सालों से इस्तेमाल की जा रही है।

बीएल-22 घातक कैंसर कोशिकाओं के भीतर आसानी से व जल्दी जाकर इन्हें नष्ट कर सकती है। यह दवा खास तौर पर रोएंदार कोशिका वाले रक्त कैंसर के लिए तैयार की गई है।

बीएल-22 के काम करने का तरीका भी काफी आसान है। इसका एण्टीबॉडी वाला हिस्सा रक्त कैंसर की कोशिकाओं की सतह पर उपस्थित ग्राहक से जुड़ जाता है और दवा कोशिका में अंदर चली जाती है। कोशिका के अंदर बीएल -22 का विष वाला हिस्सा कोशिका की प्रोटीन निर्माण मशीनरी पर कब्जा कर उसे नष्ट कर देता है। यह विष *स्यूडोमोनास* नामक बैक्टीरिया से प्राप्त किया गया है। यह काफी असरकारक एन्ज़ाइम है। इसका एक अणु एक कोशिका के खात्मे हेतु पर्याप्त होता है।

जिन 16 लोगों पर पुराने तरीके का इलाज बेअसर रहा था उनमें से 11 लोगों को बीएल-22 के उपयोग से पूरी तरह से कैंसर से छुटकारा मिल गया और 2 मरीज़ों को आंशिक लाभ मिला। ठीक हो चुके लोगों में से यह रोग हो गया जिसका इलाज एक बार फिर किया गया। सभी ठीक हो गए। लॉस एंजिल्स के जॉन वेने कैंसर इंस्टीट्यूट के लारेंस पाइटो कहते हैं कि रोगमुक्त होने की यह दर बेहद अच्छी है. इससे पता चलता है कि यह एक अतिसक्रिय अणु है जिसका आगे भी विकास होना चाहिए।

वैसे तो यह अध्ययन केवल रोएंदार कोशिका वाले रक्त कैंसर पर केंद्रित था लेकिन क्रेटमैन को विश्वास है कि एण्टीबॉडी और विष का यह मेल अन्य रक्त कैंसरों पर भी प्रभावी होगा। कई अन्य रोगों के लिए भी यह उपचार कारगर साबित हो सकता है। पाइटो कहते हैं कि जार्ण लिम्फोसाइटिक रक्त कैंसर, जो कि इस रोग का सबसे आम रूप है, के ग्राहक वही हैं जो रोएंदार कोशिका वाले रक्त कैंसर के हैं।

चूंकि बीएल-22 काफी नई दवा है इसलिए इसके साइड प्रभावों के बारे में पूरी तरह से नहीं बताया जा सकता। परीक्षण में भी कुछ मरीज़ों में ऐसे असर देखे गए जिन पर काबू पाया जा सका। बहरहाल, इसके परीक्षण सावधानीपूर्वक किए जाने की ज़रूरत है। *(स्रोत फीचर्स)*